آيَاتُهَا ١١٢ ❀ (٢١) سُوْرَةُ الْاَنْـبِيَآءِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

आयात 112	(21) सूरतुल अम्बिया रसूल (जमा)	रुकूआत 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ

ग़फ़्लत में	और वह	उन का हिसाब	लोगों के लिए	क़रीब आ गया

مُّعْرِضُوْنَ ۚ ﴿١﴾ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ

वह उसे सुनते हैं	मगर	नई	उन के रब से	कोई नसीहत	उन के पास नहीं आती	1	मुँह फेर रहे हैं

وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ

और वह लोग जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	सरगोशी	और चुपके चुपके बात की	उन के दिल	ग़फ़्लत में हैं	2	खेलते हैं (खेलते हुए)	और वह

هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٣﴾

3	देखते हो	और (जबकि) तुम	जादू	क्या पस तुम आओगे	तुम ही जैसा	एक बशर	मगर	यह	क्या

قٰلَ رَبِّىْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٤﴾

4	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	बात	जानता है	मेरा रब	आप ने फ़रमाया

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ښ فَلْيَاْتِنَا

पस वह हमारे पास ले आए	एक शायर	बल्कि वह	उस ने घड़ लिया	बल्कि	ख़्वाब	परेशान	उन्हों ने कहा	बल्कि

بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٥﴾ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ

हम ने उसे हलाक किया	कोई बस्ती	उन से क़ब्ल	न ईमान लाई	5	पहले	भेजे गए	जैसे	कोई निशानी

اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	हम वहि भेजते थे	मर्द	मगर	तुम से पहले	भेजे हम ने	और नहीं	6	ईमान लाएंगे	और क्या वह (यह)

فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧﴾ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ

और हम ने नहीं बनाए उन के	7	तुम नहीं जानते	तुम हो	अगर	याद रखने वाले	पस पूछ लो

جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ

हम ने सच्चा कर दिया उन से	फिर	8	हमेशा रहने वाले	और वह न थे	खाना	न खाते हों	ऐसे जिस्म

الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ

तहक़ीक़ हम ने नाज़िल की	9	हद से बढ़ने वाले	और हम ने हलाक कर दिया	और जिस को हम ने चाहा	पस हम ने बचा लिया उन्हें	वादा

اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا

और हम ने कितनी हलाक कर दीं	10	तो क्या तुम समझते नहीं	तुम्हारा ज़िक्र	उस में	एक किताब	तुम्हारी तरफ़

ع ١٠

مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾

11	दूसरे	गिरोह - लोग	उन के बाद	और पैदा किए हम ने	ज़ालिम	वह थीं	बस्तियां	से

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

लोगों के लिए उन के हिसाब (का वक़्त) क़रीब आ गया, और वह ग़फ़्लत में (उस से) मुँह फेर रहे हैं। (1) उन के पास उन के रब (की तरफ़) से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उसे खेलते हुए (बे परवाह हो कर) सुनते हैं। (2) उन के दिल ग़फ़्लत में हैं और ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशी की कि यह (मुहम्मद रसूलुल्लाह) क्या हैं! मगर एक बशर तुम ही जैसे, क्या (फिर भी) तुम जादू के पास आओगे? जबकि तुम देखते हो। (3) आप (स) ने फ़रमाया मेरा रब जानता है हर बात जो आस्मानों में और ज़मीन में (होती है) और वह सुनने वाला जानने वाला है। (4) बल्कि उन्हों ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब हैं, बल्कि उस ने घड़ लिया है, बल्कि वह तो एक शायर है, पस वह हमारे पास कोई निशानी लाए जैसे पहले (नबी निशानियां दे कर) भेजे गए थे। (5) उन से क़ब्ल कोई बस्ती जिस को हम ने हलाक किया (निशानियां देख कर भी) ईमान नहीं लाई, तो क्या यह ईमान ले आएंगे? (6) और हम ने (रसूल) नहीं भेजे तुम से पहले मगर मर्द, हम उन की तरफ़ वहि भेजते थे, पस याद रखने वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। (7) और हम ने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए कि वह खाना न खाते हों, और वह न थे हमेशा रहने वाले। (8) फिर हम ने उन से अपना वादा सच्चा कर दिया, पस हम ने उन्हें बचा लिया और जिस को हम ने चाहा, और हम ने हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया। (9) तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ एक किताब नाज़िल की जिस में तुम्हारा ज़िक्र है, तो क्या तुम समझते नहीं? (10) और हम ने हलाक कर दीं कितनी ही बस्तियां, कि वह ज़ालिम थीं, और हम ने उन के बाद दूसरे गिरोह (और लोग) पैदा किए। (11)

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوْا

तुम मत भागो	12	भागने लगे	उस से	उस वक़्त वह	हमारा अ़ज़ाब	उन्हों ने आहट पाई	फिर जब

وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

13	तुम्हारी पूछ गछ हो	ताकि तुम	और अपने घर (जमा)	उस में	तुम आसाइश दिए गए	जो	तरफ़	और लौट जाओ

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	उन की पुकार	यह	पस रही	14	ज़ालिम	हम बेशक थे	हाए हमारी शामत	वह कहने लगे

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	और हम ने नहीं पैदा किया	15	बुझी हुई आग	कटी हुई खेती	हम ने उन्हें कर दिया

وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ

तो हम उस को बना लेते	कोई खिलौना	हम बनाएं	कि	अगर हम चाहते	16	खेलते हुए	उन के दरमियान	और जो

مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ

बातिल	पर	हक़ को	हम फेंक मारते हैं	बल्कि	17	करने वाले	अगर हम होते	अपने पास से

فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

18	तुम बनाते हो	उस से जो	ख़राबी	और तुम्हारे लिए	नाबूद हो जाता है	वह	तो उस वक़्त	पस वह उस का भेजा निकाल देता है

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

वह तकब्बुर (सरकशी) नहीं करते	उस के पास	और जो	और ज़मीन में	आस्मानों में	जो	और उसी के लिए

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और दिन	रात	वह तस्बीह करते हैं	19	और न वह थकते हैं	उस की इबादत	से

لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	उन्हें उठा खड़ा करेंगे	वह	ज़मीन से	कोई माबूद	उन्हों ने बना लिया	क्या	20	वह सुस्ती नहीं करते

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ

अल्लाह	पस पाक है	अलबत्ता दोनों दरहम बरहम हो जाते	अल्लाह	सिवाए	माबूद	उन दोनों में	अगर होते

رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ

और (बल्कि) वह	वह करता है	उस से जो	उस से बाज़ पुर्स नहीं करते	22	वह बयान करते हैं	उस से जो	अ़र्श	रब

يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا

लाओ (पेश करो)	फ़रमा दें	और माबूद	अल्लाह के सिवा	उन्हों ने बना लिए हैं	क्या	23	बाज़ पुर्स किए जाएंगे

بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ

जो मुझ से पहले	और किताब	मेरे साथ	जो	यह किताब	अपनी दलील

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

24	रूगर्दानी करते हैं	पस वह	हक़	नहीं जानते	उन में अक्सर	बल्कि (अलबत्ता)

फिर जब उन्हों ने हमारे अ़ज़ाब की आहट पाई तो उस वक़्त उस से भागने लगे। (12)
तुम मत भागो और लौट जाओ उसी तरफ़ जहां तुम्हें आसाइश दी गई थी और अपने घरों की तरफ़, ताकि तुम्हारी पूछ गछ हो। (13)
वह कहने लगे हाए हमारी शामत! बेशक हम ज़ालिम थे। (14)
पस (बराबर) उन की यह पुकार रही, यहां तक कि हम ने उन्हें कटी हुई खेती और बुझी हुई आग (की तरह ढेर) कर दिया। (15)
और हम ने नहीं पैदा किया आस्मान को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान में है खेलते हुए (बेकार)। (16)
अगर हम कोई खिलौना बनाना चाहते तो हम उस को अपने पास से बना लेते, अगर हम करने वाले होते (अगर हमें यह करना होता)। (17)
बल्कि हम फेंक मारते हैं, हक़ को बातिल पर, पस वह उस का भेजा (कचुम्बर) निकाल देता है तो वह उसी वक़्त नाबूद हो जाता है, और तुम्हारे लिए उस (बात) से ख़राबी है जो तुम बनाते हो। (18)
और उसी के लिए है जो आस्मानो में और ज़मीन में है और जो उस के पास हैं वह सरकशी नहीं करते उस की इबादत से और न वह थकते हैं। (19)
और रात दिन तस्बीह (उस की पाकीज़गी) बयान करते हैं सुस्ती नहीं करते। (20)
क्या उन्हों ने ज़मीन से कोई और माबूद बना लिए हैं कि वह उन्हें (मरने के बाद) दोबारा उठा कर खड़ा करेंगे। (21)
अगर उन दोनों (आस्मान ओ ज़मीन) में और माबूद होते अल्लाह के सिवा तो अलबत्ता (ज़मीन ओ आस्मान) दरहम बरहम हो जाते, पस अर्श अज़ीम का रब अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (22)
वह उस से पूछताछ नहीं कर सकते उस के (बारे में) जो वह करता है बल्कि वह पूछताछ किए जाएंगे। (23)
क्या उन्हों ने उस के सिवा और माबूद बनाए हैं? फ़रमा दें, पेश करो अपनी दलील, यह किताब है जो मेरे साथ हैं, और किताब जो मुझ से पहले नाज़िल हुई हैं, अलबत्ता उन में अक्सर नहीं जानते हक़ को, पस वह रूगर्दानी करते हैं। (24)

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا نُوۡحِيۡۤ اِلَيۡهِ اَنَّهٗ

कि बेशक वह	उस की तरफ़	हम ने वहि भेजी	मगर	कोई रसूल	आप से पहले	और नहीं भेजा हम ने

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدُوۡنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحۡمٰنُ وَلَدًا

एक बेटा	अल्लाह	बना लिया	और उन्हों ने कहा	25	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा	नहीं कोई माबूद

سُبۡحٰنَهٗ ؕ بَلۡ عِبَادٌ مُّكۡرَمُوۡنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسۡبِقُوۡنَهٗ بِالۡقَوۡلِ وَهُمۡ

और वह	बात में	वह उस से सबक़त नहीं करते	26	मुअ़ज़्ज़ज़	बन्दे	बल्कि	वह पाक है

بِاَمۡرِهٖ يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٢٧﴾ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ

और जो उन के पीछे	उन के हाथों में (सामने)	जो	वह जानता है	27	अ़मल करते	उस के हुक्म पर

وَلَا يَشۡفَعُوۡنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارۡتَضٰى وَهُمۡ مِّنۡ خَشۡيَتِهٖ مُشۡفِقُوۡنَ ﴿٢٨﴾

28	डरते रहते हैं	उस के ख़ौफ़ से	और वह	उस की रज़ा हो	जिस के लिए	मगर	और वह सिफ़ारिश नहीं करते

وَمَنۡ يَّقُلۡ مِنۡهُمۡ اِنِّىۡۤ اِلٰهٌ مِّنۡ دُوۡنِهٖ فَذٰلِكَ نَجۡزِيۡهِ جَهَنَّمَ ؕ

जहन्नम	हम उसे सज़ा देंगे	पस वह शख़्स	उस के सिवा	माबूद	बेशक मैं	उन में से	कहे	और जो

ع ١٩ ٢ ٢

كَذٰلِكَ نَجۡزِى الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٢٩﴾ اَوَلَمۡ يَرَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنَّ

कि	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	क्या नहीं देखा	29	ज़ालिम (जमा)	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ كَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰهُمَا ؕ وَجَعَلۡنَا مِنَ الۡمَآءِ

पानी से	और हम ने किया	पस हम ने दोनों को खोल दिया	बन्द	दोनों थे	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

كُلَّ شَىۡءٍ حَىٍّ ؕ اَفَلَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلۡنَا فِى الۡاَرۡضِ رَوَاسِىَ

पहाड़	ज़मीन में	और हम ने बनाए	30	क्या पस वह ईमान नहीं लाते हैं	ज़िन्दा	हर शै

اَنۡ تَمِيۡدَ بِهِمۡ وَجَعَلۡنَا فِيۡهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمۡ يَهۡتَدُوۡنَ ﴿٣١﴾

31	राह पाएं	ताकि वह	रास्ते	कुशादा	उस में	और हम ने बनाए	कि झुक न पड़े उन के साथ

وَجَعَلۡنَا السَّمَآءَ سَقۡفًا مَّحۡفُوۡظًا ۖۚ وَّهُمۡ عَنۡ اٰيٰتِهَا مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٣٢﴾

32	रूगर्दानी करते हैं	उस की निशानियां	से	और वह	महफ़ूज़	एक छत	आस्मान	और हम ने बनाए

وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ

सब	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	पैदा किया	जिस ने	और वह

فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلۡنَا لِبَشَرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ الۡخُلۡدَ ؕ

हमेशा रहना	आप (स) से क़ब्ल	किसी बशर के लिए	और हम ने नहीं किया	33	तैर रहे हैं	दाइरा (मदार) में

اَفَا۟ئِنۡ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ

चखना	हर जी	34	हमेशा रहेंगे	पस वह	आप इन्तिक़ाल कर गए	क्या पस अगर

الۡمَوۡتِ ؕ وَنَبۡلُوۡكُمۡ بِالشَّرِّ وَالۡخَيۡرِ فِتۡنَةً ؕ وَاِلَيۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٣٥﴾

35	तुम लौट कर आओगे	और हमारी ही तरफ़	आज़माइश	और भलाई	बुराई से	और हम तुम्हें मुब्तला करेंगे	मौत

और तुम से पहले हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम ने वहि भेजी उस की तरफ़ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो। (25) उन (मुश्रिकों) ने कहा कि अल्लाह ने एक बेटा बना लिया है, वह उस (तोहमत) से पाक है, बल्कि मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। (26) वह बात में उस से सबक़त नहीं करते और वह उस के हुक्म पर अ़मल करते हैं। (27) वह जानता है जो उन के सामने और उन के पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं करते, मगर जिस के लिए उस की रज़ा हो, और वह उस के ख़ौफ़ से डरते रहते हैं। (28) और उन में से जो कोई यह कहे कि बेशक उस के सिवा मैं माबूद हूँ, पस उस शख़्स को हम सज़ाए जहन्नम देंगे, इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (29) क्या काफ़िरों ने नहीं देखा? कि आस्मान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, पस हम ने दोनों को खोल दिया, और हम ने पानी से हर शै को ज़िन्दा किया, तो क्या (फिर भी) वह ईमान नहीं लाते? (30) और हम ने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वह उन (लोगों) के साथ झुक न पड़े, और हम ने उस में कुशादा रास्ते बनाए ताकि वह राह पाएं। (31) और हम ने बनाया आस्मान एक महफ़ूज़ छत और वह उस की निशानियों से रूगर्दानी करते हैं। (32) और वही है जिस ने पैदा किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, सब (अपने अपने) मदार में तैर रहे हैं। (33) और हम ने आप (स) से पहले किसी बशर के लिए हमेशा रहना नहीं (तजवीज़) किया, पस अगर आप (स) इन्तिक़ाल कर गए तो क्या वह हमेशा रहेंगे? (34) हर जी (मुतनफ़्फ़िस) को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आज़माइश में मुब्तला करेंगे, और हमारी तरफ़ ही तुम लौट कर आओगे। (35)

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

क्या यह है	एक हँसी मज़ाक़	मगर (सिर्फ़)	ठहराते तुम्हें	नहीं	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तुम्हें देखते हैं	और जब

الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	मुन्किर (जमा)	वह	रहमान (अल्लाह)	ज़िक्र से	और वह	तुम्हारे माबूद	याद करता है	वह जो

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾

37	तुम जल्दी न करो	अपनी निशानियां	अ़नक़रीब मैं दिखाता हूँ तुम्हें	जल्दी (जल्द बाज़)	से	इन्सान	पैदा किया गया

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ

काश वह जान लेते	38	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا

और न	आग	अपने चेहरे	से	वह न रोक सकेंगे	वह घड़ी	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً

अचानक	आएगी उन पर	बल्कि	39	मदद किए जाएंगे	और न वह	उन की पीठ (जमा)	से

فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾

40	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें	उस को लौटाना	पस न उन्हें सकत होगी	तो हैरान कर देगी उन्हें

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا

मज़ाक़ उड़ाया	उन को जिन्हों ने	आ घेरा (पकड़ लिया)	आप (स) से पहले	रसूलों की	और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई

ع ٣ ١٢ ٣ مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ ع قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ

रात में	तुम्हारी निगहबानी करता है	कौन	फ़रमा दें	41	मज़ाक़ उड़ाते थे	उस के साथ (का)	थे	जो	उन में से

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	रूगर्दानी करते हैं	अपना रब	याद से	बल्कि वह	रहमान से	और दिन

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ

मदद	वह सकत नहीं रखते	हमारे सिवा	उन्हें बचाते हैं	कुछ माबूद	उन के लिए	क्या

اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ

उन को	हम ने साज़ ओ सामान दिया	बल्कि	43	वह साथी पाएंगे	हम से	और न वह	अपने आप

وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي

कि हम आ रहे हैं	क्या पस वह नहीं देखते	उम्र	उन पर-की	दराज़ हो गई	यहां तक कि	और उन के बाप दादा को

الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ

इस के सिवा नहीं कि	फ़रमा दें	44	ग़ालिब आने वाले	क्या फिर वह	उस के किनारे (जमा)	से	उस को घटाते हुए	ज़मीन

اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۫ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	उन्हें डराया जाए	भी	जब	पुकार	बहरे	और नहीं सुनते हैं	वहि से	मैं तुम्हें डराता हूँ

और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें सिर्फ़ एक हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, कि क्या यह है? वह जो तुम्हारे माबूदों को (बुराई से) याद करता है, और वह अल्लाह के ज़िक्र से मुन्किर हैं। (36)

इन्सान को पैदा किया गया है जल्द बाज़, अ़नक़रीब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता हूँ, सो तुम जल्दी न करो। (37)

और वह कहते हैं कि यह वादाए (अ़ज़ाब) कब (आएगा)? अगर तुम सच्चे हो। (38)

काश काफ़िर उस घड़ी को जान लेते जब वह न रोक सकेंगे (दोज़ख़ की) आग को अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न वह मदद किए जाएंगे। (39)

बल्कि (क़ियामत) उन पर अचानक आएगी तो वह उन्हें हैरान (बद हवास) कर देगी, पस उन्हें उसे लौटाने की सकत न होगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (40)

और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई आप (स) से पहले रसूलों की, पस उन में से जिन्हों ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस (अ़ज़ाब ने) आ घेरा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (41)

फ़रमा दें, रहमान (के अ़ज़ाब) से रात और दिन तुम्हारी कौन निगहबानी करता है? बल्कि वह अपने रब की याद से रूगर्दानी करते हैं। (42)

क्या हमारे सिवा उन के कुछ और माबूद हैं? जो उन्हें (मसाइब से) बचाते हैं, वह सकत नहीं रखते अपनी मदद की (भी) और न वह हम से (बचाने के लिए) साथी पाएंगे। (43)

बल्कि हम ने उन को उन के बाप दादा को साज़ ओ सामान दिया यहांतक कि उन की उम्र दराज़ हो गई। पस क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते (मुन्किरों पर तंग करते) आ रहे हैं, फिर क्या वह ग़ालिब आने वाले हैं। (44)

आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हें वहि से डराता हूँ, और बहरे पुकार नहीं सुनते जब भी उन्हें डराया जाए। (45)

وَلَئِنۡ مَّسَّتۡهُمۡ نَفۡحَةٌ مِّنۡ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوۡلُنَّ يٰوَيۡلَنَآ

हाए हमारी शामत	वह ज़रूर कहेंगे	तेरा रब	अ़ज़ाब से	एक लपट	उन्हें छुए	और अगर

اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الۡمَوَازِيۡنَ الۡقِسۡطَ لِيَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ

क़ियामत	दिन	इंसाफ़	तराजू- मीज़ान	और हम रखेंगे (क़ाइम करेंगे)	46	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे

فَلَا تُظۡلَمُ نَفۡسٌ شَيۡـًٔا ؕ وَاِنۡ كَانَ مِثۡقَالَ حَبَّةٍ

एक दाना	वज़न बराबर	होगा	और अगर	कुछ भी	किसी शख़्स पर	तो न ज़ुल्म किया जाएगा

مِّنۡ خَرۡدَلٍ اَتَيۡنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيۡنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا

और अलबत्ता हम ने अ़ता की	47	हिसाब लेने वाले	हम	और काफ़ी	हम उसे ले आएंगे	राई से - का

مُوۡسٰى وَهٰرُوۡنَ الۡفُرۡقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكۡرًا لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٤٨﴾

48	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और रोशनी	फ़र्क़ करने वाली (किताब)	और हारून (अ)	मूसा (अ)

الَّذِيۡنَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَيۡبِ وَهُمۡ مِّنَ السَّاعَةِ

क़ियामत	से	और वह	बग़ैर देखे	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग

مُشۡفِقُوۡنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكۡرٌ مُّبٰرَكٌ اَنۡزَلۡنٰهُ ؕ اَفَاَنۡتُمۡ لَهٗ

इस के	तो क्या तुम	हम ने इसे नाज़िल किया	बाबरकत	नसीहत	और यह	49	ख़ौफ़ खाते हैं

الربع ع ٤/ ٩

مُنۡكِرُوۡنَ ﴿٥٠﴾ ع وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَاۤ اِبۡرٰهِيۡمَ رُشۡدَهٗ مِنۡ قَبۡلُ

उस से क़ब्ल	हिदायत याबी (फ़हमे सलीम)	इब्राहीम (अ)	और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने दी	50	मुन्किर (जमा)

وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيۡنَ ﴿٥١﴾ اِذۡ قَالَ لِاَبِيۡهِ وَقَوۡمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيۡلُ

मूर्तियाँ	क्या है यह	और अपनी क़ौम	अपने बाप से	जब उस ने कहा	51	जानने वाले	उस के	और हम थे

الَّتِيۡۤ اَنۡتُمۡ لَهَا عٰكِفُوۡنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوۡا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا لَهَا

उन के लिए	अपने बाप दादा को	हम ने पाया	वह बोले	52	जमे बैठे हो	उन के लिए	तुम	जो कि

عٰبِدِيۡنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدۡ كُنۡتُمۡ اَنۡتُمۡ وَاٰبَآؤُكُمۡ فِىۡ ضَلٰلٍ

गुमराही में	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तहक़ीक़ तुम रहे	उस ने कहा	53	पूजा करने वाले

مُّبِيۡنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوۡۤا اَجِئۡتَنَا بِالۡحَقِّ اَمۡ اَنۡتَ مِنَ اللّٰعِبِيۡنَ ﴿٥٥﴾

55	खेलने वाले (दिल लगी करने वाले)	से	तुम	या	हक़ को	क्या तुम लाए हो हमारे पास	वह बोले	54	सरीह

قَالَ بَلۡ رَّبُّكُمۡ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ الَّذِىۡ

वह जिस ने	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	रब (मालिक)	तुम्हारा रब	बल्कि	उस ने कहा

فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمۡ مِّنَ الشّٰهِدِيۡنَ ﴿٥٦﴾

56	गवाह (जमा)	से	इस बात पर	और मैं	उन्हें पैदा किया

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيۡدَنَّ اَصۡنَامَكُمۡ بَعۡدَ اَنۡ تُوَلُّوۡا مُدۡبِرِيۡنَ ﴿٥٧﴾

57	पीठ फेर कर	तुम जाओगे	कि	बाद	तुम्हारे बुत (जमा)	अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूंगा	और अल्लाह की क़सम

और अगर उन्हें तेरे रब के अ़ज़ाब की एक लपट छुए तो वह ज़रूर कहेंगे हाए हमारी शामत! हम ज़ालिम थे। (46) और हम क़ियामत के दिन मीज़ाने अ़दल क़ाइम करेंगे तो किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा। और अगर (कोई अ़मल) राई के एक दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ले आएंगे, और काफ़ी हैं हम हिसाब लेने वाले। (47) और हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) को (हक़ ओ बातिल में) फ़र्क़ करने वाली (किताब) और रोशनी अ़ता की, और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (48) जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे डरते हैं और वह क़ियामत से ख़ौफ़ खाते हैं। (49) और यह बाबरकत नसीहत है (जो) हम ने नाज़िल की है तो क्या तुम उस के मुन्किर हो? (50) और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने उस से क़ब्ल इब्राहीम (अ) को फ़हम सलिम दी थी और हम उस के जानने वाले थे। (51) जब उस ने कहा अपने बाप से और अपनी क़ौम से, क्या हैं यह मूर्तियाँ? जिन के लिए तुम जमे बैठे हो। (52) वह बोले हम ने पाया अपने बाप दादा को उन की पूजा करते। (53) उस (इब्राहीम अ) ने कहा तहक़ीक़ तुम और तुम्हारे बाप दादा सरीह गुमराही में रहे। (54) वह बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो? या दिल लगी करने वालों में से हो। (55) उस ने कहा बल्कि तुम्हारा रब मालिक है आस्मानों और ज़मीन का, वह जिस ने उन्हें पैदा किया और उस बात पर मैं गवाहों में से (गवाह) हूँ। (56) और अल्लाह की क़सम! अलबत्ता मैं तुम्हारे बुतों से ज़रूर चाल चलूंगा, उस के बाद जबकि तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। (57)

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	रुजूअ़ करें	उस की तरफ़	ताकि वह	उन का	एक बड़ा	सिवाए	रेज़ा रेज़ा	उस ने उन्हें कर डाला

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

59	ज़ालिम (जमा)	से	बेशक वह	यह हमारे माबूदों के साथ	किया	कौन - किस	कहने लगे

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا

बोले	60	इब्राहीम (अ)	उस को	कहा जाता है	वह उन के बारे में बातें करता है	एक जवान	हम ने सुना है	वह बोले

فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

61	वह देखें	ताकि वह	लोग	आँखें	सामने	उसे	तुम ले आओ

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ

उस ने किया है	बल्कि	उस ने कहा	62	ऐ इब्राहीम (अ)	हमारे माबूदों के साथ	यह	तू ने किया	क्या तू	उन्हों ने कहा

كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى

तरफ़	पस वह लौटे (सोच में पड़ गए)	63	वह बोलते हैं	अगर	तो उन से पूछ लो	यह	उन का बड़ा

اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا

फिर वह औन्धे किए गए	64	ज़ालिम (जमा)	तुम ही	बेशक तुम	फिर उन्हों ने कहा	अपने दिल

عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

क्या फिर तुम परस्तिश करते हो	उस ने कहा	65	बोलते हैं	यह	नहीं	तू खूब जानता है	अपने सरों पर

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ اُفٍّ

तुफ़	66	और न नुक़्सान पहुँचा सकें तुम्हें	कुछ	न तुम्हें नफ़ा पहुँचा सकें	जा	अल्लाह के सिवा

لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	फिर तुम नहीं समझते	क्या	अल्लाह के सिवा	परस्तिश करते हो तुम	और उस पर जिसे	तुम पर

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	तुम हो करने वाले (कुछ करना है)	अगर	अपने माबूदों	और तुम मदद करो	तुम इसे जला डालो	वह कहने लगे

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَاَرَادُوْا

और उन्हों ने इरादा किया	69	इब्राहीम (अ)	पर	और सलामती	ठंडी	ऐ आग तू हो जा	हम ने हुक्म दिया

بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا

और लूत (अ)	और हम ने उसे बचा लिया	70	बहुत ख़सारा पाने वाले (ज़ियांकार)	तो हम ने उन्हें कर दिया	फ़रेब	उस के साथ

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

उस को	और हम ने अ़ता किया	71	जहानों के लिए	उस में	वह जिस में हम ने बरकत रखी	सर ज़मीन	तरफ़

اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾

72	सालेह (नेकोकार)	हम ने बनाया	और सब	पोता	और याक़ूब (अ)	इसहाक़ (अ)

पस उस ने उन के एक बड़े के सिवा सब को रेज़ा रेज़ा कर डाला, ताकि वह उस की तरफ़ रुजूअ़ करें। (58)

कहने लगे कौन है जिस ने हमारे माबूदों के साथ यह किया? बेशक वह तो ज़ालिमों में से है। (59)

बोले हम ने सुना है कि एक जवान इन (बुतों) के बारे में बातें करता है, उस को इब्राहीम (अ) कहा जाता है। (60)

बोले तो उसे लोगों की आँखों के सामने ले आओ ताकि वह देखें। (61)

उन्हों ने कहा कि ऐ इब्राहीम (अ)! क्या यह तू ने हमारे माबूदों के साथ किया है? (62)

उस ने कहा बल्कि यह उन के बड़े ने किया है तो उन (ही) से पूछ लो अगर वह बोलते हैं। (63)

पस वह सोच में पड़ गए अपने दिलों में, फिर उन्हों ने कहा बेशक तुम ही ज़ालिम हो (नाहक़ पर हो)। (64)

फिर वह अपने सरों पर औन्धे किए गए (उन की मत पलट गयी), तू खूब जानता है कि यह नहीं बोलते। (65)

उस ने कहा क्या तुम फिर अल्लाह के सिवा उन की परस्तिश करते हो? जो न तुम्हें कुछ नफ़ा पहुँचा सकें और न नुक़्सान पहुँचा सकें। (66)

तुफ़ है तुम पर! और (उन) बुतों पर जिन की तुम अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हो? क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (67)

वह कहने लगे उसे जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना है। (68)

हम ने हुक्म दिया, ऐ आग! तू इब्राहीम (अ) पर ठंडी हो जा और सलामती। (69)

और उन्हों ने उस के साथ फ़रेब का इरादा किया तो हम ने उन्हें कर दिया इन्तिहाई ज़ियांकार। (70)

और हम ने उसे और लूत (अ) को उस सर ज़मीन की तरफ़ (भेज कर) बचा लिया, जिस में हम ने जहानों के लिए बरकत रखी। (71)

और उस को अ़ता किया इसहाक़ (अ) (बेटा), और याक़ूब (अ) पोता, और हम ने उन सब को नेकोकार बनाया। (72)

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ

नेक काम करना	उन की तरफ़	और हम ने वहि भेजी	हमारे हुक्म से	वह हिदायत देते थे	(जमा) इमाम (पेश्वा)	और हम ने उन्हें बनाया

وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

73	इबादत करने वाले	हमारे ही	और वह थे	ज़कात	और अदा करना	नमाज़	और क़ाइम करना

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ

जो	बस्ती से	और हम ने उसे बचा लिया	और इल्म	हुक्म	हम ने उसे दिया	और लूत (अ)

كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

74	बदकार	बुरे लोग	थे	बेशक वह	गन्दे काम	करती थी

ع ٥ ٢٥ ٥

وَاَدْخَلْنٰهُ فِىْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَنُوْحًا

और नूह (अ)	75	(जमा) सालेह (नेकोकार)	से	बेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाख़िल किया उसे

اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ

बेचैनी	से	और उस के लोग	फिर हम ने उसे नजात दी	उस की	तो हम ने क़ुबूल कर ली	उस से पहले	जब पुकारा

الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ

हमारी आयातों को	झुटलाया	जिन्हों ने	लोग	से-पर	और हम ने उस को मदद दी	76	बड़ी

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ

और दाऊद (अ)	77	सब	हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	बुरे	लोग	वह थे	बेशक वह

وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ

उस में	रात में चर गईं	जब	खेती के बारे में	फ़ैस्ला कर रहे थे	जब	और सुलेमान (अ)

غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ

सुलेमान (अ)	पस हम ने उस को फ़हम दी	78	मौजूद	उनके फ़ैसले (के वक़्त)	और हम थे	एक क़ौम की बकरियां

وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ

पहाड़ (जमा)	दाऊद (अ)	साथ-का	और हम ने मुसख़्ख़र कर दिया	और इल्म	हुक्म	हम ने दिया	और हर एक

يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ

सनअ़त (कारीगरी)	और हम ने उसे सिखाई	79	करने वाले	और हम थे	और परिन्दे	वह तस्बीह करते थे

لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

तुम	पस क्या	तुम्हारी लड़ाई	से	ताकि वह तुम्हें बचाए	तुम्हारे लिए	एक लिबास

شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖٓ

उस के हुक्म से	चलती	तेज़ चलने वाली	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	80	शुक्र करने वाले

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

81	जानने वाले	हर शै	और हम हैं	उस में	जिस को हम ने बरकत दी है	सरज़मीन	तरफ़

और हम ने उन्हें पेश्वा बनाया, वह हमारे हुक्म से हिदायत देते थे और हम ने उन की तरफ़ वहि भेजी नेक काम करने की, और नमाज़ क़ाइम करने, और ज़कात अदा करने की, और वह हमारी ही इबादत करने वाले थे। (73)

और हम ने लूत (अ) को हुक्म दिया (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म (दिया) और हम ने उसे उस बस्ती से बचा लिया जो गन्दे काम करती थी, बेशक वह थे बुरे और बदकार लोग। (74)

और हम ने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से है। (75)

और (याद करो) जब उस से क़ब्ल नूह (अ) ने पुकारा तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल कर ली, फिर हम ने उसे और उस के लोगों को नजात दी बड़ी बेचैनी (सख़्ती) से। (76)

और हम ने उस को मदद दी उन लोगों पर जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, बेशक वह बुरे लोग थे, फिर हम ने उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (77)

और (याद करो) जब दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) एक खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जब उस में रात के वक़्त एक क़ौम की बकरियां चर गईं, और हम उन के फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे। (78)

पस हम ने सुलेमान (अ) को (सहीह फ़ैसले की) फ़हम दी और हर एक को हम ने हुक्म (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म दिया, और हम ने पहाड़ों को दाऊद (अ) के साथ मुसख़्ख़र कर दिया, वह तस्बीह करते थे और परिन्दे (भी मुसख़्ख़र किए) और करने वाले हम थे। (79)

और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक लिबास (बनाने) की कारीगरी सिखाई ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाई से बचाए, पस क्या तुम शुक्र करने वाले हो? (80)

और हम ने तेज़ चलने वाली हवा सुलेमान (अ) के लिए (मुसख़्ख़र की) वह उस के हुक्म से उस सरज़मीन में (शाम) की तरफ़ चलती, जिस में हम ने बरकत दी, और हम हर शै को जानने वाले हैं। (81)

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

और से	शैतान (जमा)	जो ग़ोता लगाते थे	उस के लिए	और करते थे	काम

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى

उस के सिवा	और हम थे	उन के लिए	संभालने वाले	82	और अय्यूब (अ)	जब उस ने पुकारा

رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾

अपना रब	कि मैं	मुझे पहुँची है	तक्लीफ़	और तू	सब से बड़ा रहम करनेवाला	रहम करने वाले	83

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ

तो हम ने क़ुबूल कर ली	उस की	पस हम ने खोल दी	जो	उस को	तक्लीफ़	और हम ने दिए उसे	उस के घर वाले

وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

और उन जैसे	उन के साथ	रहमत फ़रमा कर	से	अपने पास	और नसीहत	इबादत करने वालों के लिए	84

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

और इस्माईल (अ)	और इदरीस (अ)	और ज़ुल किफ़्ल	यह सब	से	सब्र करने वाले	85

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

और हम ने दाख़िल किया उन्हें	अपनी रहमत में	बेशक वह	से	नेकोकार (जमा)	86

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ

और ज़ुन नून (मच्छली वाला)	जब	चला गया	गुस्से में भर कर	पस गुमान किया उस ने	कि हम हरगिज़ तंगी न करेंगे	उस पर

فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ

तो उस ने पुकारा	अन्धेरों में	कि नहीं	कोई माबूद	तेरे सिवा	तू पाक है

اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ

बेशक मैं	मैं था	से	ज़ालिम (जमा)	87	फिर हम ने क़ुबूल कर ली	उस की	और हम ने उसे नजात दी

مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّآ

ग़म से	और इसी तरह	हम नजात देते हैं	मोमिन (जमा)	88	और ज़करिया (अ)

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ

जब उस ने पुकारा	अपना रब	ऐ मेरे रब	न छोड़ मुझे	अकेला	और तू

خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا

बेहतर	वारिस (जमा)	89	फिर हम ने क़ुबूल कर ली	उस की	और हम ने अ़ता किया	उसे	यहिया (अ)	और हम ने दुरुस्त कर दिया

لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ

उस के लिए	उस की बीवी	बेशक वह सब	वह जल्दी करते थे	में	नेक काम (जमा)

وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

और वह हमें पुकारते थे	उम्मीद	और ख़ौफ़	और वह थे	हमारे लिए (सामने)	आजिज़ी करने वाले	90

और शैतानों में से (मुसख़्ख़र किए) जो ग़ोता लगाते थे उस के लिए, और उस के सिवा और काम (भी) करते थे, और हम उन को संभालते थे। (82)
और अय्यूब (अ) को (याद करो) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे तक्लीफ़ पहुँची है और तू रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है। (83)
तो हम ने क़ुबूल कर ली उस की (दुआ़), पस उसे जो तक्लीफ़ थी हम ने खोल दी (दूर कर दी) और हम ने उसे उस के घर वाले दिए, और उन के साथ उन जैसे (और भी) रहमत फ़रमा कर अपने पास से, और इबादत करने वालों के लिए नसीहत। (84)
और इस्माईल (अ), और इदरीस (अ), और ज़ुलकिफ़्ल (अ), यह सब सब्र करने वालों में से थे। (85)
और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से थे। (86)
और (याद करो) जब मछली वाले (यूनुस अ अपनी क़ौम से) गुस्से में भर कर चल दिए, पस उस ने गुमान किया कि हम हरगिज़ उस पर तंगी (गिरफ़्त) न करेंगे (जब मछली निगल गई) तो उस ने अन्धेरों में पुकारा कि (ऐ अल्लाह) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों (क़ुसूरवारों) में से था। (87)
फिर हम ने उस की (दुआ़) क़ुबूल कर ली और हम ने उसे ग़म से नजात दी, और इस तरह हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं। (88)
और (याद करो) जब ज़करिया (अ) ने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब! मुझे अकेला (लावारिस) न छोड़ और तू (सब से) बेहतर वारिस है। (89)
फिर हम ने उस की (दुआ़) क़ुबूल कर ली और हम ने उसे अ़ता किया यहिया (अ) और हम ने उस के लिए उस की बीवी को दुरुस्त (औलाद के क़ाबिल) कर दिया बेशक वह सब नेक कामों में जल्दी करते थे, वह हमें उम्मीद ओ ख़ौफ़ से पुकारते थे। और वह हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। (90)

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا

अपनी रूह	उस में	फिर हम ने फूंक दी	अपनी शर्मगाह (इफ़्फ़त की)	उस ने हिफ़ाज़त की	और (औरत) जो

وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ

तुम्हारी उम्मत	यह है	बेशक	91	जहानों के लिए	निशानी	और उस का बेटा	और हम ने उसे बनाया

اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ

अपना काम (दीन)	और टुकड़े टुकड़े कर लिया उन्हों ने	92	पस मेरी इबादत करो	तुम्हारा रब	और मैं	एक (यकता)	उम्मत

ع ٦ ١٨ ٦ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ

नेक काम	कुछ	करे	पस जो	93	रुजूअ़ करने वाले	हमारी तरफ़	सब	बाहम

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

94	लिख लेने वाले	उस के	और बेशक हम	उस की कोशिश	तो नाक़द्री (अकारत) नहीं	ईमान वाला	और वह

وَحَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا

जब	यहां तक कि	95	लौट कर नहीं आएंगे	कि वह	जिसे हम ने हलाक कर दिया	बस्ती पर	और हराम

فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	फिसलते (दौड़ते) आएंगे	बुलन्दी (टीले)	हर	से	और वह	और माजूज	याजूज	खोल दिए जाएंगे

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ

आँखें	ऊपर लगी (फटी) रह जाएंगी	वह	तो अचानक	सच्चा	वादा	और क़रीब आजाएगा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا

बल्कि हम थे	इस से	ग़फ़्लत में	तहक़ीक़ हम थे	हाए हमारी शामत	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	से	तुम परस्तिश करते हो	और जो	बेशक तुम	97	ज़ालिम (जमा)

حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ

यह	अगर होते	98	दाख़िल होने वाले	तुम उस में	जहन्नम	इंधन

اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا

वहां	उनके लिए	99	सदा रहेंगे	उस में	और सब	उस में दाख़िल न होते	माबूद

زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ

पहले ठहर चुकी	जो लोग	बेशक	100	(कुछ) न सुन सकेंगे	उस में	और वह	चीख़ ओ पुकार

لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰۗىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

वह न सुनेंगे	101	दूर रखे जाएंगे	उस से	वह लोग	भलाई	हमारी (तरफ़) से	उन के लिए

حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102	वह हमेशा रहेंगे	उन के दिल	जो चाहेंगे	में	और वह	उस की आहट

(और याद करो मरयम अ को) जिस ने अपनी इफ़्फ़त की हिफ़ाज़त की, फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी, और हम ने उसे और उस के बेटे को जहानों के लिए निशानी बनाया। (91)

बेशक यह है तुम्हारी उम्मत (मिल्लत) यकता उम्मत, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मेरी इबादत करो। (92)

और उन्हों ने अपना काम (दीन) बाहम टुकड़े टुकड़े कर लिया, सब हमारी तरफ़ रुजूअ़ करने वाले (लौटने वाले) हैं। (93)

पस जो कोई नेक काम करे और वह ईमान वाला हो तो अकारत नहीं (जाएगी) उस की कोशिश, और बेशक हम उस के लिख लेने वाले हैं। (94)

उस बस्ती पर (दुनिया में लौट कर आना) हराम है, जिसे हम ने हलाक कर दिया कि वह लौट कर नहीं आएंगे। (95)

यहां तक कि जब याजूज ओ माजूज खोल दिए जाएंगे, और वह हर टीले से दौड़ते आएंगे। (96)

और सच्चा वादा क़रीब आजाएगा तो अचानक मुन्किरों की आँखें फटी की फटी रह जाएंगी, हाए हमारी शामत! तहक़ीक़ हम इस से ग़फ़्लत में थे, बल्कि हम ज़ालिम थे। (97)

बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा, जहन्नम का ईंधन हैं, तुम उस में दाख़िल होने वाले हो। (98)

अगर यह माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते, और वह सब उस में सदा रहेंगे। (99)

उन के लिए वहां चीख़ ओ पुकार है, और वह उस में कुछ न सुन सकेंगे। (100)

बेशक जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले (ही) भलाई ठहर चुकी वह लोग उस से दूर रखे जाएंगे। (101)

वह न सुनेंगे उस की आहट (भी) और उन के दिल जो चाहेंगे वह उस (आराम ओ राहत) में हमेशा रहेंगे। (102)

उन्हें ग़मगीन न करेगी बड़ी घबराहट, और फ़रिश्ते उन्हें लेने आएंगे, यह है (वह) दिन जिस का तुम से वादा किया गया था। (103)
जिस दिन हम आस्मान लपेट देंगे, जैसे तहरीर के काग़ज़ का तूमार लपेटा जाता है, जैसे हम ने पहली बार पैदाइश की थी हम उसे फिर लौटा देंगे, यह वादा हम पर (हमारे ज़िम्मे) है, बेशक हम पूरा करने वाले हैं। (104)
और तहक़ीक़ हम ने ज़बूर में नसीहत के बाद लिखा कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे। (105)
बेशक इस में इबादत गुज़ार लोगों के लिए (बशारत) एक बड़ी ख़बर है। (106)
और हम ने नहीं भेजा आप (स) को मगर तमाम जहानों के लिए रहमत। (107)
आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मेरी तरफ़ वहि की गई है कि बस तुम्हारा माबूद माबूद यकता है, पस क्या तुम हुक्म बरदार हो? (108)
फिर अगर वह रूगर्दानी करें तो कह दो कि मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया है बराबरी पर (यकसां तौर से) और मैं नहीं जानता जो तुम से वादा किया गया है वह क़रीब है या दूर? (109)
बेशक वह जानता है पुकार कर कही हुई बात को (भी) और वह (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो। (110)
और मैं नहीं जानता शायद (अ़ज़ाब में ताख़ीर) तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुद्दत तक फ़ाइदा पहुँचाना हो। (111)
नबी (स) ने कहा ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा, और हमारा रब निहायत मेहरबान है, उस से मदद तलब की जाती है (उन बातों) पर जो तुम बयान करते (बनाते) हो। (112)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है। (1)

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ

तुम्हारा दिन	यह है	फ़रिश्ते	और लेने आएंगे उन्हें	बड़ी	घबराहट	ग़मगीन न करेगी उन्हें

الَّذِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ

तुमार	जैसे लपेटा जाता है	आस्मान	हम लपेट लेंगे	जिस दिन	103	तुम थे वादा किए गए (वादा किया गया था)	वह जो

لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

बेशक हम हैं	हम पर	वादा	हम उसे लौटा देंगे	पैदाइश	पहली	जैसे हम ने इब्तिदा की	तहरीर का काग़ज़

فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ

कि	नसीहत के बाद	ज़बूर में	और तहक़ीक़ हम ने लिखा	104	(पूरा) करने वाले

الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا

एक बड़ी ख़बर	इस में	बेशक	105	नेक (जमा)	मेरे बन्दे	उस के वारिस	ज़मीन

لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107	तमाम जहानों के लिए	रहमत	मगर	हम ने भेजा आप (स) को	और नहीं	106	इबादत गुज़ार (जमा)	लोगों के लिए

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

तुम	पस क्या	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	कि बस	मेरी तरफ़	वहि की गई	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْٓ

जानता मैं	और नहीं	बराबरी पर	मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया	तो कह दो	वह रूगर्दानी करें	फिर अगर	108	हुक्म बरदार (जमा)

اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ

से कही गयी बात	बुलंद आवाज़	वह जानता है	बेशक वह	109	जो तुम से वादा किया गया	या दूर	क्या क़रीब?

وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾ وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ

तुम्हारे लिए	आज़माइश	शायद वह	और मैं नहीं जानता	110	जो तुम छुपाते हो	और जानता है

وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا

और हमारा रब	हक़ के साथ	तू फ़ैसला फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस (नबी) ने कहा	111	एक मुद्दत तक	और फ़ाइदा पहुँचाना

الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع ١٩ ٧ النصف

112	जो तुम बयान करते हो	पर	जिस से मदद तलब की जाती है	निहायत मेहरबान

آيَاتُهَا ٧٨ ❀ سُوْرَةُ الْحَجِّ (٢٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकूआत 10 (22) सूरतुल हज आयात 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾

1	बड़ी भारी	चीज़	क़ियामत	ज़लज़ला	बेशक	अपना रब	डरो	ऐ लोगो!

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ

वह दूध पिलाती है	जिस को	हर दूध पिलाने वाली	भूल जाएगी	तुम देखोगे उसे	जिस दिन

وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى

नशे में	लोग	और तू देखेगा	अपना हम्ल	हर हम्ल वाली (हामिला)	और गिरा देगी

وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ

और कुछ लोग जो	2	सख़्त	अल्लाह का अ़ज़ाब	और लेकिन	नशे में	और हालांकि नहीं

مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ

हर शैतान	और पैरवी करते हैं	बे जाने बूझे	अल्लाह के (बारे) में	झगड़ा करते हैं	जो

مَّرِيْدٍ ﴿٣﴾ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ

उसे गुमराह करेगा	तो वह बेशक	जो दोस्ती करेगा उस से	कि वह	उस पर (उस की) निस्बत लिख दिया गया	3	सरकश

وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٤﴾ يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	ऐ लोगो!	4	दोज़ख़	अ़ज़ाब	तरफ़	और राह दिखाएगा उसे

فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ

फिर	मिट्टी से	हम ने पैदा किया तुम्हें	तो बेशक हम	जी उठना	से	शक में

مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ

और बग़ैर सूरत बनी	सूरत बनी हुई	गोश्त की बोटी से	फिर	जमे हुए ख़ून से	फिर	नुत्फ़े से

لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى

तक	जो हम चाहें	रहमों में	और हम ठहराते हैं	तुम्हारे लिए	ताकि हम ज़ाहिर कर दें

اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ

अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	बच्चा	हम निकालते हैं तुम्हें	फिर	एक मुद्दते मुक़र्ररा

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ

निकम्मी उम्र	तक	पहुँचता है	कोई	और तुम में से	फ़ौत हो जाता है	कोई	और तुम में से

لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَتَرَى الْاَرْضَ

ज़मीन	और तू देखता है	कुछ	इल्म (जानना)	बाद	ताकि वह न जाने

هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ

और उभर आई	वह तरोताज़ा हो गई	पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब	ख़ुश्क पड़ी हुई

وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	इस लिए कि	यह	5	रौनक़दार	हर जोड़ा	से	और उगा लाई

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

6	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और यह कि वह	मुर्दों	ज़िन्दा करता है	और यह कि वह	वही बरहक़

जिस दिन तुम उसे देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली जिस (बच्चे) को दूध पिलाती है, और हर हामिला अपना हम्ल गिरा देगी, और तू लोगों को देखेगा (जैसे वह) नशे में हों हालांकि वह नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। (2)

और कुछ लोग हैं जो अल्लाह के बारे में बे जाने बूझे झगड़ा करते हैं, और वह हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं। (3)

उस की निसबत लिख दिया गया कि जो उस से दोस्ती करेगा तो वह बेशक उसे गुमराह कर देगा, और उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ राह दिखाएगा। (4)

ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) जी उठने से शक में हो तो (सोचो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर जमे हुए ख़ून से, फिर गोश्त की बोटी से, सूरत बनी हुई और बग़ैर सूरत बनी (अधूरी) ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी क़ुदरत) ज़ाहिर कर दें और हम (माँओं के) रहमों में से जो चाहें एक मुद्दत तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें निकालते हैं बच्चे (की सूरत में) ताकि फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुम में कोई (उम्रे तबई से क़ब्ल) फ़ौत हो जाता है, और तुम में से कोई पहुँचता है निकम्मी उम्र तक, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने (नासमझ हो जाए)। और तू ज़मीन को देखता है ख़ुश्क पड़ी हुई, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह तरोताज़ा हो गई, और उभर आई, और वह उगा लाई हर (क़िस्म) का जोड़ा रौनक़दार (नबातात का)। (5)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है, और यह कि वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और यह कि वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (6)

وَاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ

जो	उठाएगा	अल्लाह	और यह कि	उस में	नहीं शक	आने वाली	घड़ी (क़ियामत)	और यह कि

فِى الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

बग़ैर किसी इल्म	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ता है	जो	और लोगों में से	7	क़ब्रों में

وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٨﴾ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ

से	ताकि गुमराह करे	अपनी गर्दन	मोड़े हुए	8	रोशन	और बग़ैर किसी किताब	और बग़ैर किसी दलील

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

रोज़े क़ियामत	और हम उसे चखाएंगे	रुस्वाई	दुनिया में	उस के लिए	अल्लाह	रास्ता

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ

नहीं	और यह कि अल्लाह	तेरे हाथ	आगे भेजा	यह उस सबब जो	9	जलती आग	अ़ज़ाब

بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ ع ١٠ ٨

एक किनारा	पर	अल्लाह	बन्दगी करता है	जो	लोग	और से	10	अपने बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला

فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اِۨطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ اِۨنْقَلَبَ عَلٰى

पर-बल	तो पलट गया	कोई आज़माइश	उसे पहुँची	और अगर	उस से	तो इत्मिनान पा लिया	भलाई	उसे पहुँच गई	फिर अगर

وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾

11	खुला	वह घाटा	यह है	और आख़िरत	दुनिया में घाटा	अपना मुँह

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

वह	यह है	न उसे नफ़ा पहुँचाए	और जो	न उसे नुक़्सान पहुँचाए	जो	अल्लाह के सिवा	से	पुकारता है वह

الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ ۚ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ

उस के नफ़ा से	ज़ियादा क़रीब	उस का ज़रर	उस को जो	वह पुकारता है	12	दूर-इन्तिहा दर्जा	गुमराही

لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करेगा	बेशक अल्लाह	13	रफ़ीक़	और बेशक बुरा	दोस्त	बेशक बुरा

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ

नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए

اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ

हरगिज़ उस की मदद न करेगा	कि	गुमान करता है	जो	14	जो वह चाहता है	करता है	बेशक अल्लाह

اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ

आस्मान की तरफ़	एक रस्सी	तो उसे चाहिए कि ताने	और आख़िरत	दुनिया में	अल्लाह

ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾

15	जो गुस्सा दिला रही है	उस की तदबीर	दूर कर देती है	क्या	फिर देखे	उसे काट डाले	फिर

और यह कि क़ियामत आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, और यह कि अल्लाह उठाएगा जो क़ब्रों में हैं। (7) और लोगों में कोई (ऐसा भी है) जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है बग़ैर किसी इल्म के, और बग़ैर किसी दलील के, और बग़ैर किसी किताबे रोशन के। (8) (तकब्बुर से) अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह के रास्ते से गुमराह करे, उस के लिए दुनिया में रुस्वाई है और हम उसे रोज़े क़ियामत जलती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे। (9) यह उस सबब से जो तेरे हाथों ने (आगे) भेजा (तेरे आमाल) और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (10) और लोगों में (कोई ऐसा भी है) जो एक किनारे पर अल्लाह की बन्दगी करता है, फिर अगर उसे भलाई पहुँच गई तो उस (इबादत) से इत्मिनान पा लिया, और उसे अगर कोई आज़माइश पहुँची तो वह अपने मुँह के बल पलट गया, दुनिया और आख़िरत के घाटे में रहा, यही है खुला घाटा। (11) वह अल्लाह के सिवा पुकारता है (उस को) जो न उसे नुक़्सान पहुँचा सके और न उसे नफ़ा पहुँचा सके, यही है इन्तिहा दरजे की गुमराही। (12) वह पुकारता है, उस को जिस का ज़रर उस के नफ़ा से ज़ियादा क़रीब है, बेशक बुरा है (यह) दोस्त और बुरा है (यह) रफ़ीक़। (13) जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए बेशक अल्लाह उन्हें उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती हैं नहरें, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। (14) जो शख़्स गुमान करता है कि अल्लाह उस (रसूल स) की हरगिज़ मदद न करेगा दुनिया और आख़िरत में, तो उसे चाहिए के एक रस्सी आस्मान की तरफ़ ताने, फिर उसे (आस्मान को) काट डाले, फिर देखे क्या उस की यह तदबीर उस चीज़ को दूर कर देती है जो उसे गुस्सा दिला रही है। (15)

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

16	वह चाहता है	जिस को	हिदायत देता है	और यह कि अल्लाह	रोशन	आयतें	हम ने इस को नाज़िल किया	और इसी तरह

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى

और नसारा (मसीही)	और साबी (सितारा परस्त)	यहूदी हुए	और जो	जो लोग ईमान लाए	बेशक

وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

रोज़े क़ियामत	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	बेशक अल्लाह	और वह जिन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और आतिश परस्त

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ

जो	सिज्दा करता है उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा?	17	मुत्तला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ

और सितारे	और चाँद	और सूरज	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۭ وَكَثِيْرٌ حَقَّ

साबित हो गया	और बहुत से	इन्सान (जमा)	से	और बहुत	और चौपाए	और दरख़्त	और पहाड़

عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۭ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	कोई इज़्ज़त देने वाला	तो नहीं उस के लिए	ज़लील करे अल्लाह	और जिसे	अज़ाब	उस पर

السجدة ٦ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ﴿١٨﴾ السجدة هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ز

अपने रब (के बारे) में	वह झगड़े	दो फ़रीक़	यह दो	18	जो वह चाहता है	करता है

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ

ऊपर	डाला जाएगा	आग के	कपड़े	उन के लिए	काटे गए	कुफ़्र किया	पस वह जिन्हों ने

رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ ج يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾ ط

20	और जिल्द (खालें)	उन के पेटों में	जो	उस से	पिघल जाएगा	19	खौलता हुआ पानी	उन के सर (जमा)

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا

कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	21	लोहे के	गुर्ज़	और उन के लिए

٢ ع ١٢ ٩ مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۠ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾ ع

22	जलने का अज़ाब	और चखो	उस में	लौटा दिए जाएंगे	ग़म से (ग़म के मारे)	उस से

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ

बाग़ात	नेक	और उन्हों ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करेगा	बेशक अल्लाह

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ

कंगन	वह पहनाए जाएंगे उस में	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

23	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोने के

और इसी तरह हम ने इस (क़ुरआन) को उतारा, रोशन आयतें और यह कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है। (16)

बेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और सितारा परस्त, और नसारा, और आतिश परस्त, और मुश्रिक, बेशक अल्लाह फ़ैसला कर देगा रोज़े क़ियामत उन के दरमियान, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला है। (17)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह के लिए सिज्दा करता है जो (भी) आस्मानों में और जो (भी) ज़मीन में है, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़, और दरख़्त, और चौपाए और बहुत से इन्सान (भी), और बहुत से हैं कि साबित हो गया है उन पर अज़ाब, और जिसे अल्लाह ज़लील करे उस के लिए कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, और बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)

यह दो फ़रीक़ अपने रब के बारे में झगड़े, पस जिन्हों ने कुफ़्र किया, उन के लिए आग के कपड़े काटे जा चुकें हैं, उन के सरों के ऊपर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। (19)

उस से पिघल जाएगा जो उन के पेटों में है और (उन की) खालें (भी) (20) और उन के लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। (21)

जब भी वह ग़म के मारे उस से निकलने का इरादा करेंगे उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा) जलने का अज़ाब चखो। (22)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, बेशक अल्लाह उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती है नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और उस में उन का लिबास रेशम (का होगा)। (23)

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ

राह	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई	बात	से-की	पाकीज़ा	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई

الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और वह रोकते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	24	तारीफ़ों का लाइक़

وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِىْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِۨالْعَاكِفُ

रहने वाला	बराबर	लोगों के लिए	हम ने मुक़र्रर किया	वह जिसे	मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह)

فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ

से	हम उसे चखाएंगे	ज़ुल्म से	गुमराही का	उस में	इरादा करे	और जो	और परदेसी	उस में

عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ ع ٣ ١٠

कि	ख़ाने कअ़बा की जगह	इब्राहीम के लिए	हम ने ठीक कर दी	और जब	25	दर्दनाक	अ़ज़ाब

لَّا تُشْرِكْ بِىْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ

और क़ियाम करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	और पाक रखना	किसी शै	मेरे साथ	न शरीक करना

وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا

पैदल	वह तेरे पास आएं	हज का	लोगों में	और एलान कर दो	26	सिज्दा करने वाले	और रुकूअ़ करने वाले

وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوْا

ताकि वह देखें	27	दूर दराज़	हर रास्ता	से	वह आती हैं	हर दुबली ऊँटनी	और पर

مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِىْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ

जाने पहचाने (मुक़र्ररा) दिन	में	अल्लाह का नाम	वह याद करें (करलें)	अपने	फ़ाइदे

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا

उस से	पस तुम खाओ	मवेशी	चौपाए	से	हम ने उन्हें दिया	जो	पर

وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ

अपना मैल कुचैल	चाहिए कि दूर करें	फिर	28	मोहताज	बदहाल	और खिलाओ

وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

29	क़दीम घर	और तवाफ़ करें	अपनी नज़्रें	और पूरी करें

ذٰلِكَ ۭ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ

उसके रब के नज़्दीक	उसके लिए	बेहतर	पस वह	शआ़इरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां)	ताज़ीम करे	और जो	यह

وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا

पस तुम बचो	तुम पर-तुम को	जो पढ़ दिए गए	सिवाए	मवेशी	तुम्हारे लिए	और हलाल क़रार दिए गए

الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾

30	झूटी	बात	और बचो	बुत (जमा)	से	गन्दगी

और उन्हें हिदायत की गई पाकीज़ा बात की तरफ़ और हिदायत की गई तारीफ़ों के लाइक़ (अल्लाह) के रास्ते की तरफ़। (24)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और वह रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और बैतुल्लाह से जिसे हम ने मुक़र्रर किया है सब लोगों के लिए, उस में रहने वाले और परदेसी बराबर हैं (हुक़ूक़ में) और जो उस में ज़ुल्म से गुमराही का इरादा करेगा हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे। (25)

और (याद करो) जब हम ने इब्राहीम (अ) के लिए ख़ाने कअ़बा की जगह ठीक कर दी, (हम ने हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, और मेरा घर पाक रखना तवाफ़ करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों और रुकूअ़ ओ सिज्दा करने वालों के लिए। (26)

और लोगों में हज का एलान कर दो कि वह तेरे पास पैदल और दुबली ऊँटनियों पर आएं, वह आती हैं हर दूर दराज़ रास्ते से। (27)

ताकि वह फ़ाइदे देखें जो यहां उन के लिये रखे गए हैं, और वह अल्लाह का नाम लें मुक़र्ररा दिनों में (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों (जानवरों) पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस उन में से तुम (ख़ुद भी) खाओ और बदहाल मोहताज को (भी) खिलाओ। (28)

फिर चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें, और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें, और क़दीम घर (बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। (29)

यह (है हुक्म) और जो अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम करे, पस वह (ताज़ीम) उस के रब के नज़्दीक उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल क़रार दिए गए उन के सिवा जो तुम पर पढ़ दिए (सुना दिए गए) पस तुम बचो (किनारा कश रहो) बुतों की गन्दगी से। और बचो झूटी बात से। (30)

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا

तो गोया	अल्लाह का	शरीक करेगा	और जो	उस के साथ	शरीक करने वाले	न	अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर

خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِىْ بِهِ الرِّيْحُ فِىْ

में	हवा	उस को	फेंक देती है	या	परिन्दे	पस उसे उचक ले जाते हैं	आस्मान से	वह गिरा

مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِكَ ۙ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ

से	तो बेशक यह	शआइरे अल्लाह	ताज़ीम करेगा	और जो	यह	31	दूर दराज़	किसी जगह

تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ

फिर	एक मुद्दते मुक़र्रर	तक	नफ़ा (फ़ाइदे)	उस में	तुम्हारे लिए	32	(जमा) क़ल्ब (दिल)	परहेज़गारी

ع ٨ ١١

مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا

क़ुरबानी	हम ने मुक़र्रर की	और हर उम्मत के लिए	33	बैते क़दीम (बैतुल्लाह)	तक	उन के पहुँचने का मुक़ाम

لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ

मवेशी	चौपाए	से	जो हम ने दिए उन्हें	पर	अल्लाह का नाम	ताकि वह लें

فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	आजिज़ी से गर्दन झुकाने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	फ़रमाबरदार हो जाओ	पस उस के	माबूदे यकता	पस तुम्हारा माबूद

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى

पर	और सब्र करने वाले	उन के दिल	डर जाते हैं	अल्लाह का नाम लिया जाए	जब	वह जो

مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और क़ाइम करने वाले	जो उन्हें पहुँचे

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ

भलाई	उस में	तुम्हारे लिए	शआइरे अल्लाह	से	तुम्हारे लिए	हम ने मुक़र्रर किए	और क़ुरबानी के ऊँट

فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا

उन के पहलू	गिर जाएं	फिर जब	क़तार बान्ध कर	उन पर	अल्लाह का नाम	पस लो तुम

فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا

हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	और सवाल करने वाले	सवाल न करने वाले	और खिलाओ	उन से	तो खाओ

لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا

और न	उन का गोश्त	हरगिज़ नहीं पहुँचता अल्लाह को	36	शुक्र करो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए

دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا

हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	तुम से	तक़्वा	उस को पहुँचता	और लेकिन (बल्कि)	उन का ख़ून

لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	नेकी करने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	जो उस ने हिदायत दी तुम्हें	पर	अल्लाह	ताकि तुम बड़ाई से याद करो	तुम्हारे लिए

(सब को छोड़ कर) अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर, (किसी को) न शरीक करने वाले उस के साथ, और जो कोई अल्लाह का शरीक करेगा तो गोया वह आस्मान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं या फेंक देती है उस को हवा किसी दूर दराज़ की जगह में। (31)

यह (है हुक्म) और जो शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) की ताज़ीम करेगा तो बेशक यह दिलों की परहेज़गारी से है। (32)

तुम्हारे लिए उन (मवेशियों) में एक मुद्दते मुक़र्रर तक फ़ाइदे (हासिल करना जाइज़) है, फिर उन के पहुँचने का मुक़ाम बैते क़दीम (बैतुल्लाह) के पास है। (33)

और हम ने हर उम्मत के लिए क़ुरबानी मुक़र्रर की ताकि वह अल्लाह का नाम लें (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों चौपायों पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस उस के फ़रमांबरदार हो जाओ, और (ऐ मुहम्मद स) आजिज़ी से गर्दन झुकाने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (34)

वह (जिन की कैफ़ियत यह है कि) जब अल्लाह का नाम लिया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं, और वह सब्र करने वाले उस पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ क़ाइम करने वाले, और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (35)

और क़ुरबानी के ऊँट हम ने तुम्हारे लिए शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) मुक़र्रर किए, तुम्हारे लिए उन में भलाई है, पस अल्लाह का नाम लो (ज़ुबह करते वक़्त) उन पर क़तार बान्ध कर, फिर जब उन के पहलू (ज़मीन पर) गिर जाएं (ज़ुबह हो जाएं) तो उन में से (ख़ुद भी) खाओ और खिलाओ, सवाल न करने वालों को और सवाल करने वालों को, इसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया है ताकि तुम शुक्र करो (एहसान मानो)। (36)

अल्लाह को हरगिज़ नहीं पहुँचता उन का गोश्त और न उन का ख़ून, बल्कि उस को पहुँचता है तक़्वा (तुम्हारे दिलों की परहेज़गारी), उसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया ताकि तुम अल्लाह को बड़ाई से याद करो उस पर जो उस ने तुम्हें हिदायत दी, और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (37)

إِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ

किसी-तमाम	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	बचाव करता है	बेशक अल्लाह

خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۭ وَإِنَّ اللّٰهَ

और बेशक अल्लाह	उन पर ज़ुल्म किया गया	क्योंकि वह	जिन से लड़ते हैं	उन लोगों को	इज़्न दिया गया	38	नाशुक्रा	दग़ाबाज़

ع ٥ ١٢ الثلثة

عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿٣٩﴾ ٱلَّذِيْنَ أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ

नाहक़	अपने घर (जमा) शहरों	से	निकाले गए	जो लोग	39	ज़रूर क़ुदरत रखता है	उन की मदद पर

إِلَّآ أَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۭ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

उन के बाज़ (एक को)	लोग	अल्लाह	दफ़अ करता	और अगर न	हमारा रब अल्लाह	वह कहते हैं	मगर (सिर्फ़) यह कि

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ

ज़िक्र किया हाता है (लिया जाता है)	और मस्जिदें	और इबादत ख़ाने	और गिरजे	सोमए	तो ढा दिए जाते	बाज़ से (दूसरे)

فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۭ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۭ إِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ

ताक़त वाला (तवाना)	बेशक अल्लाह	उस की मदद करता है	जो	और अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा अल्लाह	बहुत-बकस्रत	अल्लाह	नाम	उन में

عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾ ٱلَّذِيْنَ إِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا

और अदा करें	मनाज़	वह क़ाइम करें	ज़मीन (मुल्क) में	हम दस्तरस दें उन्हें	अगर	वह लोग जो	40	ग़ालिब

الزَّكٰوةَ وَأَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ

और अल्लाह के लिए अन्जाम कार	बुराई से	और वह रोकें	नेक कामों का	और हुक्म दें	ज़कात

الْأُمُوْرِ ﴿٤١﴾ وَإِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ

और आद	नूह की क़ौम	इन से क़ब्ल	तो झुटलाया	तुम्हें झुटलाएं	और अगर	41	तमाम काम

وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ إِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّأَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ

और झुटलाया गया	और मदयन वाले	43	और क़ौमे लूत (अ)	और इब्राहीम (अ) की क़ौम	42	और समूद

مُوْسٰى فَأَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾

44	मेरा इन्कार	हुआ	तो कैसा	मैं ने उन्हें पकड़ लिया	फिर	काफ़िरों को	पस मैं ने ढील दी	मूसा (अ)

فَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا

अपनी छतें	पर	गिरी पड़ी	कि वह-यह	ज़ालिम	और यह (वह)	हम ने हलाक किया उन्हें	बस्तियां	तो कितनी

وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَتَكُوْنَ

जो हो जाते	ज़मीन में	पस क्या वह चलते फिरते नहीं	45	गचकारी के	और बहुत महल	बेकार	और कुंएं

لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ أَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا

क्यों कि दरहक़ीक़त	उन से	सुनने लगते	या कान (जमा)	उन से	वह समझने लगते	दिल	उन के

لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

46	सीनों में	वह जो	दिल (जमा)	अन्धे हो जाते हैं	और लेकिन (बल्कि)	आँखें	अन्धी नहीं होतीं

बेशक अल्लाह दूर करता है मोमिनों से (दुश्मनों के ज़रर), बेशक अल्लाह किसी भी दग़ाबाज़ (ख़ाइन) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। (38)
इज़्ने (जिहाद) दिया गया उन लोगों को जिन से (काफ़िर) लड़ते हैं, क्यों कि उन पर ज़ुल्म किया गया, और अल्लाह बेशक उन की मदद पर ज़रूर क़ुदतर रखता है। (39)
जो लोग निकाले गए अपने शहरों से नाहक़, सिर्फ़ (इस बिना पर) कि वह कहते हैं हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह दफ़अ न करता लोगों को एक दूसरे से, तो सोमए (राहिबों के ख़िल्वत ख़ाने) और (नसारा के) गिरजे, और (यहूद के) इबादत ख़ाने और (मुसलमानों की) मस्जिदें ढा दी जातीं जिन में अल्लाह का नाम बकस्रत लिया जाता है, और अलबत्ता अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है, बेशक अल्लाह तवाना, ग़ालिब है। (40)
वह लोग कि अगर हम उन्हें मुल्क में दस्तरस (इख़्तियार) दें तो मनाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें और नेक कामों का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और तमाम कामों का अन्जाम अल्लाह ही के लिए है। (41)
और अगर यह तुम्हें झुटलाएं तो इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम ने, और आद और समूद ने, (42)
और इब्राहीम (अ) की क़ौम ने, और क़ौमे लूत (अ), (43)
और मदयन वालों ने, और मूसा (अ) को (भी) झुटलाया गया, पस मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसा हुआ मेरे इन्कार (का अन्जाम)! (44)
सो कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक किया और वह ज़ालिम थीं, तो वह (अब) अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं, और (कितने ही) कुंएं बेकार पड़े हैं, और बहुत से गचकारी के (पुख़्ता) महल (वीरान पड़े हैं)। (45)
पस क्या वह ज़मीन पर चलते फिरते नहीं जो उन के दिल (ऐसे) हो जाते कि उन से समझने लगते, या उन के कान (ऐसे हो जाते कि) उन से सुनने लगते, क्यों कि आँखें दरहक़ीक़त अन्धी नहीं हुआ करतीं, बल्कि दिल जो सीनों में हैं अन्धे हो जाया करते हैं। (46)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا

एक दिन	और बेशक	अपना वादा	अल्लाह	ख़िलाफ़ करेगा	और हरगिज़ नहीं	अज़ाब	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं

عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

बस्तियां	और कितनी ही	47	तुम गिनते हो	उस से जो	हज़ार साल के मानिंद	तुम्हारे रब के हां

ع ٦ ١٣ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ

फ़रमा दें	48	लौट कर आना	और मेरी तरफ़	मैं ने पकड़ा उन्हें	फिर	ज़ालिम	और वह	उन को	मैं ने ढील दी

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	49	डराने वाला आश्कारा	तुम्हारे लिए	मैं	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो!

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا

जिन लोगों ने कोशिश की	50	बाइज़्ज़त	और रिज़्क़	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अमल किए

فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا

और नहीं भेजा हम ने	51	दोज़ख़ वाले	वही हैं	आजिज़ करने (हराने)	हमारी आयात	में

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ

शैतान	डाला	उस ने आर्ज़ू की	जब	मगर	नबी	और न	रसूल	से-कोई	तुम से पहले

فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ

अल्लाह मज़बूत कर देता है	फिर	शैतान	जो डालता है	अल्लाह	पस मिटा देता है	उस की आर्ज़ू	में

اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ

शैतान	जो डाला	ताकि बनाए वह	52	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपनी आयात

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ

उन के दिल	और सख़्त	मरज़	उन के दिलों में	उन लोगों के लिए	एक आज़माइश

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और ताकि जान लें	53	दूर - बड़ी	अलबत्ता सख़्त ज़िद में	ज़ालिम (जमा)	और बेशक

اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ

उस के लिए	तो झुक जाएं	उस पर	तो वह ईमान ले आएं	तुम्हारे रब से	हक़	कि यह	इल्म दिया गया

قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

54	सीधा	रास्ता	तरफ़	वह लोग जो ईमान लाए	हिदायत देने वाला	और बेशक अल्लाह	उन के दिल

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

आए उन पर	यहां तक कि	उस से	शक	में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और हमेशा रहेंगे

السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

55	मनहूस दिन	अज़ाब	या आ जाए उन पर	अचानक	क़ियामत

और तुम से अज़ाब जल्दी मांगते हैं, और हरगिज़ न अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ करेगा, और बेशक तुम्हारे रब के हां एक दिन हज़ार साल के मानिंद है उस से जो तुम गिनते हो (तुम्हारे हिसाब में)। (47)

और कितनी ही बस्तियां हैं, मैं ने उन को ढील दी और वह ज़ालिम थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ा, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (48)

फ़रमा दें, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हारे लिए आश्कारा डराने वाला हूँ। (49)

पस जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अमल किए, उन के लिए बख़्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है। (50)

और जिन लोगों ने कोशिश की (अपने ज़अम में) हमारी आयात को हराने में, वही हैं दोज़ख़ वाले। (51)

और हम ने तुम से पहले नहीं भेजा कोई रसूल और न नबी, मगर जब उस ने आर्ज़ू की तो शैतान ने उस की आर्ज़ू में (वस्वसा) डाला, पस शैतान जो डालता है अल्लाह मिटा देता है, फिर अल्लाह अपनी आयात को मज़बूत कर देता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (52)

ताकि (उस वस्वसे को) जो शैतान ने डाला उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिन के दिलों में मरज़ है और उन के दिल सख़्त हैं, और बेशक ज़ालिम अलबत्ता सख़्त ज़िद में हैं। (53)

और ताकि जान लें वह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कि यह तुम्हारे रब (की तरफ़ से) हक़ है तो उस पर ईमान ले आएं और उस के लिए झुक जाएं उन के दिल, और बेशक अल्लाह उन लोगों को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है जो ईमान लाए। (54)

और वह हमेशा रहेंगे उस से शक में जिन लोगों ने कुफ़्र किया, यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आ जाए, या उन पर आ जाए मनहूस दिन का अज़ाब। (55)

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	अल्लाह के लिए	उस दिन	बादशाही

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	56	नेमतों के बाग़ात	में	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ ع ٩ ١٤

और जिन लोगों ने	57	अ़ज़ाबे ज़िल्लत	उन के लिए	पस वही लोग	हमारी आयात को	और झुटलाया

هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ

अलबत्ता वह उन्हें रिज़्क़ देगा	वह मर गए	या	मारे गए	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	हिज्रत की

اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	रिज़्क़ देने वाला	सब से बेहतर	अलबत्ता वह	और बेशक अल्लाह	अच्छा	रिज़्क़	अल्लाह

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ

अलबत्ता इल्म वाला	और बेशक अल्लाह	वह उसे पसंद करेंगे	ऐसे मुक़ाम में	वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर दाख़िल करेगा

حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ

उस से	उसे सताया गया	जैसे	सताया	और जो-जिस	यह	59	हिल्म वाला

ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

60	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह	ज़रूर मदद करेगा उस की	ज़ियादती की गई उस पर	फिर

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	दाख़िल करता है	इस लिए कि अल्लाह	यह

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

इस लिए कि अल्लाह	यह	61	देखने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	रात में

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ

और यह कि	बातिल	वह	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	जो-जिसे	और यह कि	वही हक़

اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ

उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	62	बड़ा	बुलन्द मरतबा	वह	अल्लाह

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؗ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ

बेशक	सरसब्ज़	ज़मीन	तो हो गई	पानी	आस्मान	से

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ ۚ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	उसी के लिए	63	ख़बर रखने वाला	निहायत मेहरबान	अल्लाह

فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ ع ٧ ١٥

64	तमाम ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	अलबत्ता वही	और बेशक अल्लाह	ज़मीन में

उस दिन बादशाही अल्लाह के लिए है, वह उन के दरमियान फ़ैसला करेगा, पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए वह नेमतों के बाग़ात में होंगे। (56) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया उन्हीं के लिए है ज़िल्लत का अ़ज़ाब। (57) और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में हिज्रत की, फिर मारे गए (शहीद हो गए) या मर गए, अल्लाह अलबत्ता उन्हें ज़रूर अच्छा रिज़्क़ देगा, और अल्लाह बेशक सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (58) वह अलबत्तता उन्हें ज़रूर ऐसे मुक़ाम में दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद फ़रमाएंगे, और अल्लाह बेशक इल्म वाला, हिल्म वाला है। (59) यह (तो हुआ), और जस ने दुश्मन को (उसी क़द्र) सताया जैसे उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़ियादती की गई तो अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा, बेशक अल्लाह अलबत्तता माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (60) यह इस लिए है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और यह कि अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (61) यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि जिसे वह उस के सिवा पुकारते हैं वह बातिल है, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ा है। (62) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा तो ज़मीन सरसब्ज़ हो गई, बेशक अल्लाह निहायत मेहरबान ख़बर रखने वाला है। (63) उसी के लिए है जो आस्मानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह वही बेनियाज़, तमाम ख़ूबियों वाला है। (64)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِیْ

चलती है	और कश्ती	ज़मीन में	जो	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा

فِی الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَیُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَی الْاَرْضِ

ज़मीन पर	कि वह गिर पड़े	आस्मान	और वह रोके हुए है	उस के हुक्म से	दर्या में

اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِیْٓ

जिस ने	और वही	65	निहायत मेहरबान	बड़ा शफ़क़त करने वाला	लोगों पर	बेशक अल्लाह	उस के हुक्म से	मगर

اَحْیَاكُمْ ۫ ثُمَّ یُمِیْتُكُمْ ثُمَّ یُحْیِیْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

66	बड़ा नाशुक्रा	इन्सान	बेशक	तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	मारेगा तुम्हें	फिर	तुम्हें ज़िन्दा किया

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا یُنَازِعُنَّكَ

सो चाहिए कि तुम से न झगड़ा करें	उस पर बन्दगी करते हैं	वह	एक तरीक़े इबादत	हम ने मुक़र्रर किया	हर उम्मत के लिए

فِی الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰی رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰی هُدًی مُّسْتَقِیْمٍ ﴿٦٧﴾

67	सीधी	राह	पर	बेशक तुम	अपने रब की तरफ़	और बुलाओ	उस मामले में

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	68	जो तुम करते हो	खूब जानता है	अल्लाह	तो आप कह दें	वह तुम से झगड़ें	और अगर

یَحْكُمُ بَیْنَكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	जिस में	रोज़े क़ियामत	तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِیْ كِتٰبٍ ؕ

किताब में	यह	बेशक	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	जानता है	कि अल्लाह	क्या तुझे मालूम नहीं?

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَی اللّٰهِ یَسِیْرٌ ﴿٧٠﴾ وَیَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

जो	अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	70	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक

لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَیْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ

ज़ालिमों के लिए	और नहीं	कोई इल्म	उस का	उन के लिए (उन्हें)	नहीं	और जो-जिस	कोई सनद	उस की	नहीं उतारी उस ने

مِنْ نَّصِیْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰی عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِیْ

में-पर	तुम पहचानोगे	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	71	कोई मददगार

وُجُوْهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ یَكَادُوْنَ یَسْطُوْنَ بِالَّذِیْنَ

उन पर जो	वह हमला कर दें	क़रीब है	नाखुशी	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	चेहरे

یَتْلُوْنَ عَلَیْهِمْ اٰیٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ

इस	से	बदतर	क्या मैं तुम्हें बतला दूँ?	फ़रमा दें	हमारी आयात	उन पर	पढ़ते हैं

ع ٩ ٨ ١٦ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿٧٢﴾

72	ठिकाना	और बुरा	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	अल्लाह	जिस का वादा किया	दोज़ख़

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया जो कुछ ज़मीन में है, और कश्ती उस के हुक्म से दर्या में चलती है, और वह आस्मानों को रोके हुए है कि वह ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला निहायत मेहरबान है। (65)

और वही है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा, बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (66)

हम ने हर उम्मत के लिए एक तरीक़े इबादत मुक़र्रर किया है, वह उस पर (उसी के मुताबिक़) बन्दगी करते हैं, सो चाहिए कि इस मामले में न झगड़ें, और अपने रब की तरफ़ बुलाओ, बेशक तुम हो सीधी राह पर। (67)

और अगर वह तुम से झगड़ें तो आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है जो तुम करते हो। (68)

अल्लाह रोज़े क़ियामत तुम्हारे दरमियान उस बात का फ़ैसला करेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (69)

क्या तुझे मालूम नहीं? कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, बेशक यह किताब में है, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (70)

वह अल्लाह के सिवा (उस की) बन्दगी करते हैं जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उस का (ख़ुद) उन्हें कोई इल्म नहीं, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (71)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं, तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाखुशी के (आसार) पहचान लोगे, क़रीब है कि वह उन पर हमला कर दें जो उन पर हमारी आयतें पढ़ते हैं, फ़रमा दें, क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ जो इस से बदतर है, दोज़ख़, जिस का अल्लाह ने काफ़िरों से वादा किया, और बुरा है (वह) ठिकाना। (72)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

बेशक वह जिन्हें	उस को	पस तुम सुनो	एक मिसाल	बयान की जाती है	ऐ लोगो!

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ

अगरचे	एक मक्खी	पैदा कर सकेंगे	हरगिज़ न	अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो

اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ

न छुड़ा सकेंगे उसे	कुछ	मक्खी	उन से छीन ले	और अगर	उस के लिए	वह जमा हो जाएं

مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ

अल्लाह	न क़द्र जानी उन्हों ने	73	और जिस को चाहा	चाहने वाला	कमज़ोर (बोदा है)	उस से

حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾ اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ

चुन लेता है	अल्लाह	74	ग़ालिब	क़ुव्वत वाला	बेशक अल्लाह	उस के क़द्र करने का हक़

مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٧٥﴾

75	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	और आदमियों में से	पैग़ाम पहुँचाने वाले	फ़रिश्तों में से

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना (बाज़गश्त)	अल्लाह	और तरफ़	और जो उन के पीछे	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है

الْاُمُوْرُ ﴿٧٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا

और सिज्दा करो	तुम रुकूअ़ करो	वह लोग जो ईमान लाए	ऐ	76	सारे काम

وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾

77	फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अच्छे काम	और करो	अपना रब	और इबादत करो

السّجدة عند الشافعي

وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا

और न	उस ने तुम्हें चुना	वह-उस	उस की कोशिश करना	हक़	अल्लाह (की राह) में	और कोशिश करो

جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ

तुम्हारे बाप	दीन	कोई तंगी	दीन में	तुम पर	डाली

اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِىْ هٰذَا

और इस में	इस से क़ब्ल	मुस्लिम (जमा)	तुम्हारा नाम रखा	वह-उस	इब्राहीम (अ)

لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

गवाह-निगरान	और तुम हो	तुम पर	तुम्हारा गवाह (निगरान)	रसूल (स)	ताकि हो

عَلَى النَّاسِ ۚ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا

और मज़बूती से थाम लो	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	पस क़ाइम करो	लोगों पर

ع ١٠ ٦ ١٧

بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾

78	मददगार	और अच्छा है	मौला	सो अच्छा है	तुम्हारा मौला (कारसाज़)	वह	अल्लाह को

ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, पस उस को (कान खोल कर) सुनो, बेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी (भी) न पैदा कर सकेंगे अगरचे उस के लिए वह सब जमा हो जाएं, और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वह उस से न छुड़ा सकेंगे, (कितना) बोदा है चाहने वाला और जिस को चाहा (वह भी)। (73)

उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न जानी (जैसे) उस की क़द्र करने का हक़ था, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला ग़ालिब है। (74)

अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (75)

वह जानता है जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, और अल्लाह (ही) की तरफ़ सारे कामों की बाज़गश्त है। (76)

ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ़ करो, और सिज्दा करो, और इबादत करो अपने रब की, और अच्छे काम करो ताकि तुम दो जहान में कामयाबी पाओ। (77)

और (अल्लाह की राह में) कोशिश करो (जैसे) कोशिश करने का हक़ है। उस ने तुम्हें चुना, और उस ने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं डाली, तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ) का दीन, उस ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इस से क़ब्ल (भी) और इस (क़ुरआन) में भी, ताकि रसूल (अक्रम स) तुम्हारे निगरान ओ गवाह हों और तुम निगरान ओ गवाह हो लोगों पर, पस नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात अदा करो, और अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूती से थाम लो, वह तुम्हारा कारसाज़ है, सो क्या ही अच्छा है कारसाज़, और (क्या ही) अच्छा है मददगार! (78)